माड़ की लोककथा

अच्छा मौसी अलविदा!

प्रभात

चित्रः सुनीता

एकलव्य

माड़ की लोककथा

राजस्थान के करौली ज़िले के गंगापुर, बामनवास और नादौती अंचल को माड़ का इलाका कहते हैं। यह काली मिट्टी के खेतों वाला सूखा इलाका है। तमाम भारतीय गाँवों की तरह इस इलाके में भी लोक साहित्य की समृद्ध परम्परा है। यहाँ लोककथाओं, लोकगाथाओं और पौराणिक कहानियों को दंगलों में गाकर सुनाया जाता है। लोककथाओं पर आधारित लोकगीतों के गायन की अनेक शैलियाँ भी यहाँ प्रचलित हैं जिन्हें कन्हैया, पद, हेलाख्याल, सुड्डा आदि नामों से जाना जाता है।

माड़ की लोककथाओं में माड़ के पेड़ होते हैं। पेड़ों पर माड़ के पक्षी। सुदूर पानी भरने जातीं लहँगा-लगूड़िया पहने माड़ की औरतें और लड़कियाँ। काले खेतों में काम कर रहे माड़ के लोग और रात भर चलने वाली माड़ की लम्बी आँधियाँ। माड़ की लोककथाओं में माड़ की धरती बोलती है।

अच्छा मौसी
अलविदा!

प्रभात
चित्रः सुनीता

एकलव्य

एक चिड़िया थी। उड़ते हुए उसे एक भैंस दिखाई दी।

“थक गई हूँ। क्या तुम्हारी पीठ पर बैठ जाऊँ?” चिड़िया ने भैंस से कहा।

“बैठ जाओ, पर मेरे ऊपर बीट मत कर देना।” भैंस ने चिड़िया से कहा।

बैठते ही चिड़िया ने भैंस पर बीट कर दी।

भैंस ने अपनी पूँछ घुमाकर चिड़िया को नीचे पटक दिया और उसके ऊपर गोबर कर दिया।

चिड़िया भैंस के गोबर में दब गई।

“अरे मर गई। अरे मर गई।” वह चीखती-चिल्लाती रही।

चिड़िया की चीख-चिल्लाहट सुनकर भैंस डर गई और कान हिलाती हुई आगे चली गई।

उसके जाते ही चिड़िया की जान की दुश्मन, एक बिल्ली वहाँ आ गई।

चिड़िया घबरा गई। उसने सोचा, 'अब क्या करूँ?'

वह बिल्ली से बोली, "आप तो मेरी मौसी हैं। मेरी माँ की बहन।"

बिल्ली बोली, “मौसी तो हूँ मेरी बच्ची, पर मुझे भूख भी लगी है।”

चिड़िया घबरा गई, पर बोली, “तो क्या हुआ। आप मुझे गोबर से निकाल दो। फिर हम दोनों खाना ढूँढने चलेंगे।”

“अब मुझे खाना ढूँढने की क्या ज़रूरत है। तुम हो ना,” बिल्ली ने कहा।

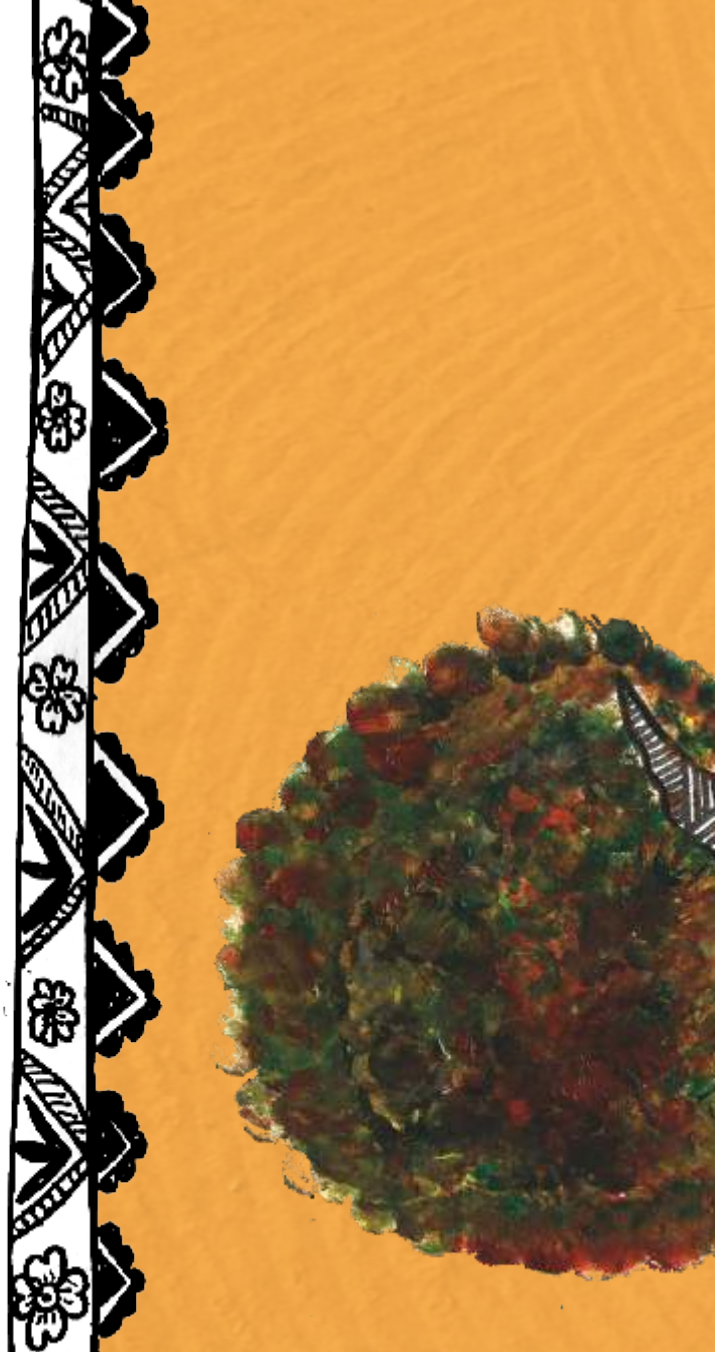

चिड़िया बिलकुल घबरा गई, पर बोली, “अभी तो मैं गोबर में फँसी हूँ। अगर मुझे खाना चाहती हो तो पहले इस गोबर से निकालो। फिर मुझे तालाब में पटककर धो डालो। फिर धूप में सुखा लो। उसके बाद बड़े मज़े से खा लो।” बिल्ली को चिड़िया का सुझाव पसन्द आया।

उसने चिड़िया को गोबर में से निकाला। तालाब में पटककर धोया। फिर धूप में सुखाया।

चिड़िया धूप में सूख रही थी। बिल्ली उसको देख रही थी।

जब चिड़िया सूख गई तो
“अच्छा मौसी, अलविदा!”
कहकर उड़ गई।

बिल्ली आसमान में
ताकती ही रह गई।

अच्छा मौसी अलविदा!
ACHCHHA MAUSI ALVIDA!

पुनर्लेखनः प्रभात
चित्रः सुनीता
डिज़ाइनः कनक शशि

प्रभात, अक्तूबर 2017
इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

© चित्रः सुनीता

अक्तूबर 2017/ 3000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो व 220 gsm पेपरबोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित

ISBN: 978-93-85236-25-9
मूल्यः ₹40.00

प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मप्र)
फोनः +91 755 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर के सिक्युप्रिंट, भोपाल, फोनः +91 755 256 7589

इस किताब में उपयोग किया गया कागज़ नवीकरणीय बागानों से प्राप्त लकड़ी से बना है।

नंगे पाँव चलने वाले, गाँधी की तरह धोती के दो टुकड़ों से शरीर को ढँकने वाले, रायसना गाँव के रामसहाय नाई के लिए जिनके जीवन के खज़ाने में लोककथाओं के अनमोल हीरे छिपे थे।

— **प्रभात**

रामसिंह गाँव में मामा के साथ बीते अपने बचपन की याद के लिए।

— **सुनीता**

प्रभात

राजस्थान के करौली ज़िले के रायसना में जन्म। शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र कार्य। बच्चों के लिए गीत, कहानी, कविता, नाटक की बीस से अधिक किताबें प्रकाशित। युवा कविता समय सम्मान सन् 2012 और सृजनात्मक साहित्य पुरस्कार सन् 2010।

सुनीता

राजस्थान के सवाई माधोपुर ज़िले के दाँतासूती गाँव में जन्मी सुनीता ने पूर्वी राजस्थान की पारम्परिक भित्ती चित्रकला माण्डना से चित्रकारी की शुरुआत की। आगे उन्होंने कागज़ और कैनवास पर अपनी तरह से काम करना शुरू किया।

सुनीता की पहली किताब *गोबल यू अप* तारा बुक्स से प्रकाशित हुई। यह किताब काफी चर्चित रही और इसका अँग्रेज़ी व कोरियन के अलावा अन्य भाषाओं में भी अनुवाद हुआ है।

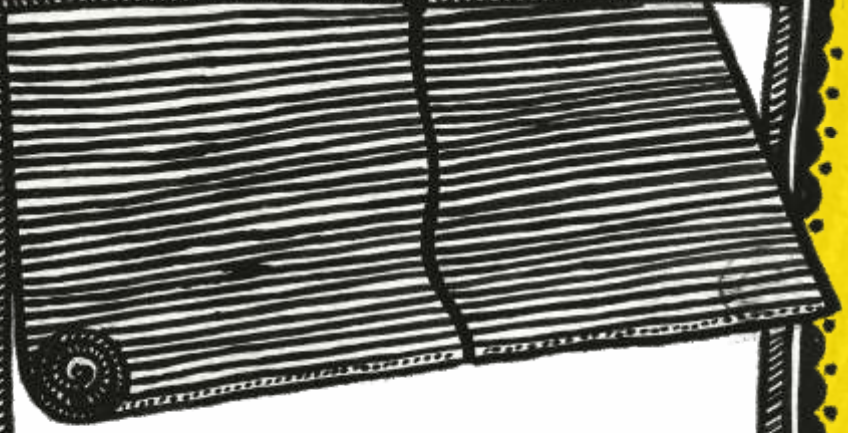

एकलव्य

मूल्य: ₹ 40.00

9 789385 236259

parag

AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS